International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157; Impact Factor: RJIF 5. 12
www.educationjournal.org
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 204-205

महिला सशक्तीकरण एवं पुरूष–नारी सम्बन्धः एक विश्लेषण

डॉ. केशरी नन्दन मिश्रा

एसोसिएट प्रोफेसर, एच.एन.बी. राजकीय पी.जी. कालेज, नैनी, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

''ढोल गंवार शूद्र पशु नारि, सकल ताड़ना के अधिकारी'' से Give us good women, we'll have a great nation तक नारी ने एक लम्बी वैचारिक यात्रा तय की है। कभी देवी के रूप में वन्दनीय, तो कभी दासी के रूप में तिरस्कृत, क्या नारी कभी भी समानता की स्थिति पा सकी है?

सभ्यता के प्रारम्भ से, तथाकथित ''सोशल कामनसेन्स'' के प्लान समाज तक, सदैव से सभ्यता का यह आधा भाग, अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहा है। प्रश्न यह उठता है कि क्यों स्त्री के नैसर्गिक व्यक्तित्व का हनन हर सभ्यता का नैतिक खेल रहा है?

इस प्रश्न का उत्तर क्या पुरूष के स्त्री को जैविक सीमिाओं से मुक्त होने में है, अधिक बलशाली होने में है, अधिक योग्य होने में है, अथवा स्त्री को सम्पत्ति समझना, एक निम्न प्रजाति का समझने में है अथवा यह अर्ह का प्रश्न है? वास्तव में सदियों से यह विवाद चलता रहा है व इसकी व्याख्या भिन्न–भिन्न प्रकार से की गयी है।

उल्लेखनीय है कि सभ्यताओं के स्वर्ण युग व अन्ध युग की भांति स्त्रियों के जीवन में भी इसी प्रकार का समय आता रहा है। वैदिक काल में जब नारी पुरूष समान थे, स्त्रियों को जनेऊ धारण करने से लेकर शिक्षा प्राप्त करने तथा इच्छानुसार वर चुनने का अधिकार था, वह वीरांगना थी, वह विदुषी थी, गार्गी, अपाला स्त्री इतिहास के वे स्वर्णाक्षर हैं, जिन्होंने आने वाले अन्ध युग में उसकी योग्यता, क्षमता, पर प्रश्नोत्तर नहीं लगने दिया। मध्य काल की परम्पराओं ने, अनेक धार्मिक मान्यताओं की विकृत व्यवस्थाओं ने स्त्री के जीवन का वह अन्धकार युग प्रारम्भ किया, जो 21वीं शताब्दी तक आते–आते भी पूर्णरूपेण समाप्त नहीं हुआ है।

मूल शब्दः महिला सशक्तिकरण, पुरूष नारी सम्बन्ध, नैसर्गिक व्यक्तित्व, वैदिक काल, वीरांगना

प्रस्तावना

इस काल में स्त्री जन्म लेने से लेकर पालन–पोषण तक, विवाह से लेकर मृत्यु संस्कार तक विवाह से लेकर मृत्यु संस्कारतक पुरूष के आधीन बन गयी। यह वह दौर था, जब वह अपनी आन्तरिक पहचान (Self-identity), व्यक्तित्व निर्माण की शक्ति, एक निजता के भाव से पूर्णतः विहीन थी, जिसमें ओज, तेज, बल भरने का प्रारम्भ पुनर्जागरण काल से हुआ, जिसमें स्त्री के अस्तित्व को व्यक्तित्व के रूप में पहचान मिली।

पाश्चात्य जगत की मेरी बुल्स्टोनक्राफ्ट (Many Well sloncraft) से सिमोन द् बुआ तक, दुर्गाबाई देशमुख से मधु किखर तक, अनेक नारीवादी विचारों ने स्त्री–दुर्दशा पर समाज का ध्यान खोंचा व प्रारम्भ हुआ सुधार का युग, वह सुधार का युग जो नारी कल्याण से प्रारम्भ होकर, नारी सशक्तीकरण पर रूका, जिसमें अनेक सामाजिक, नैतिक व सांस्कृतिक मूल्य पुनर्परिभाषित होने लगे, जिसमें नारी पुरूष की परम्परागत इक्वेशन (Traditional equation) पर मंथन प्रारम्भ हुआ, एक को आधार दूसरे को आधारित मानने पर प्रश्नचिन्ह् लगा व उस मन्थन से निकली एक आत्मनिर्भर, शिक्षित, आत्मविश्वास से परिपूर्ण, विश्व–विजय को तैयार, अपनी क्षमताओं को जानने वाली व उसके सार्थक होने को आतुर नारी!

वह नारी जो ग्लैमर व गरिमा को साथ लेकर चलाने को लालायित थी, वह जिसने पुरूष के साथ अपने सभी सम्बन्धों के निर्धारक आधारों को पुनर्परिभाषित करना चाहा व समाज को पूर्णतः नवीन समीकरण प्रदान करने की चेष्ठा की। वह बदले समीकरण जो न केवल पारिवारिक स्तर पर, वरन् सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक नैतिक, मनोवैज्ञानिक स्तर पर दृष्टिगोचर हुए व समाज की एक नवीन दिशा तय की।

परिवारिक स्तर पर चिन्तन करें तो सशक्तिकरण के बाद, पुरूष–स्त्री सम्बन्ध चाहे वह पति–पत्नी के रूप में हो अथवा माता–पुत्र के रूप में एक नये आयाम में व्याक्ष्यायित होने लगे स्त्री ने शिक्षित होकर न केवल स्वयं को आत्मनिर्भर बनाया बल्कि प्रतिस्पर्धात्मक समाज में पति को आर्थिक सहायता भी की। इससे वह एक पक्ष में पति के समतुल्य हो गयी उसका दासत्व भाव समाप्त हुआ व स्वतंत्र, चिन्तनशील प्राणों के रूप में आविर्भाव।

यह भाव जिसने स्त्री को समानता की ओर ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी जिसने स्त्री–पुरुष सम्बन्ध उच्च–निम्न के स्थान पर मैत्रीपूर्ण होने की ओर अग्रसरित हुए वह यही पहला कदम था। जब वह अपने स्वयं को शोषण विमुक्ति की ओर ले गयी।

यह वह कदम था, जिससे स्त्री की पहचान सर्वप्रथम भार से भार लेने वाली के रूप में परिणित हुई। विशेष रूप से निम्न वर्ग की स्त्रियां जिन्होंने पहली बार स्तवंत्रता व सम्मान की श्वांस ली। इसी अर्थ कमाने की योग्यता ने उसे निर्णय निर्माण में सहभागिता दिलायी, जिसमें सशक्तीकरण वास्तविक रूप से साकारित हुआ। यही वह प्रथम कदम था, जिसने नारी पूरूष सम्बन्धों का पुनर्विवेचन प्रारम्भ किया। वह नारी, जिस पर पुरूष का आधिपत्य था, वर्चस्व था आज समाज में नित नये आयाम पा रही थी। वह डाक्टर बनी, इन्जीनियर बनी, पायलट बनी, राजनीतिक बनी, आध्यापिका बनी, वैज्ञानिक बनी, कला, साहित्य, खेल मनोरंजन के क्षेत्र में उन उंचाइयों को छुआ, जो अभी तक केवल पुरूष के कार्यक्षेत्र थे।

पुरूषों के सभी क्षेत्रों में नारी के अतिक्रमण ने उसे परम्परा के साथ आधुनिकता के मूल्यों से मुक्त किया जिसमें उसने अपने प्रति हो रहे, प्रत्येक अन्याय के खिलाफ आवाज बुलन्द की। चाहे वह शर्मा हों, जो दहेज के कारण बारात लौटा देती है। अथवा मुख्तारन माई, जो अपने सामने हुए अत्याचार को विश्व के सामने रखने से नहीं हिचकिचाती निःसन्देह वह महिला पुरुष के बदलते सम्बन्धों का प्रथम आगाज था।

महिला सशक्तिकरण के इस रूप ने पुरुष को एक पारस्परिक पिता, पति व पुत्र की भूमिकाओं में परिवर्तन किया। संविधान ने कलम की नोक से स्त्री को अनेक अधिकार दिए, अनेक कानून बने, जिनसे

महिला सशक्तिकरण सम्भव हुआ। पुरूष के शोषण को भूमिका में परिवर्तन हुआ व सहयोग की भूमिका प्रारम्भ हुई। यह मूल्य सर्वप्रथम विकसित हुआ कि स्त्रियों की अपनी इच्छा व अपनी योग्यता होती है। पाश्चात्य जगत में ऐसे भी उदाहरण है, जब स्त्री ने घर के बाहर के कार्य तत्परता से किये व पुरूष ने घर के कार्यों को सम्पन्न किया। एक पिता के रूप में वह और परिपक्व हुआ जब उसने अपने पुत्रों को शिक्षा सुनिश्चित की, उसकी योग्यता को पहचान कर दिशा दी, एक पति के रूप में वह और अधिक सहभागी हुआ जब उसने घर व सन्तान के उचित पालन पोषण में योगदान दिया, वहीं मित्र के रूप में सफल हुआ जब उसने स्त्री के गुणों को पहचान, उसे आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। इस सफलता का परिणाम ही है, समाज के वे स्त्री रत्न जिन्होंने काल के गाल पर वे हस्ताक्षर किए कि एक महान विचारिका कि पक्तियां, सहज ही स्मरण हो आती हैं।

''अन्धकार की छाती पर पद चिन्ह् बनाये, चले अमावस से हम, पूजन तक आये हमने मुस्काते–मुस्काते तिमिर पिया था, हमने तम की छाती पर चढ़नाद किया था। नाग नाथने का इतिहास दोहराया हमने स्वर्णिम स्याही से उजला पृष्ठ सजाया हमने। अमेरिका की विदेश मंत्री हिलेरी क्लिंटन हों अथवा भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल, भारत की विदेश सचिव निरूपमा राव, अथवा खेल जगत की विश्व प्रसिद्ध एथलीट्स श्रीमती अन्जू बाबी जार्ज, ऐश्वर्या राय बच्चन हों अथवा सुषमा स्वराज, आर. बी. आई. की उपगवर्नर उषा थोराट हों अथवा किरन मजूमदार शां, संगीत की श्रीमती एम. एस. सुब्बलक्ष्मी हों अथवा प्रसिद्ध नृत्यांगना श्रीमती सोबना नारायण कल्पना चावला हों, सुनीता विलियम्स हों, पुलिस कमिश्नर कन्चन भट्टाचार्या हों अथवा किरन बेदी यह सूची बहुत लम्बी है जिसमें सभी महिलाएं अपने परिवार पति व पिता के सहयोग से अपनी क्षमताओं को पहचान कर अपने–अपने क्षेत्र की परिचय बनीं।

यह सूची जो एक सुखद एहसास दे रही है, क्या वास्तव में सम्पूर्ण भारत का प्रतिनिधित्व करती हैं? क्या वास्तव में महिला–सशक्तिरिण के पश्चात् पुरूष महिला सम्बन्धों में परिवर्तन हुआ है? क्या वास्तव में यह पंक्ति की हर सफल पुरूष के पीछे महिला का हाथ होता है। बदलने का समय आ गया है, कि हर सफल महिला के पीछे भी एक पुरूष है। यह सभी ऐसे प्रश्न हैं जिन पर गहन चिन्तन की आवश्यकता है। सत्य तो यह है कि स्त्री की आत्मनिर्भरता ने समाज के मूल्यों में आमूल चूल परिवर्तन नहीं किया है। इसका सशक्तिकरण इतना नहीं हुआ कि वह परम्परा व आधुनिकता की अद्वितीय सांठगांठ, भ्रूण–निर्धारण मन्त्र से अपनी पूत्री की रक्षा कर सके। पंचायत में वह सरपंच भी बनी, परन्तु केवल हस्ताक्षर की शक्ति ने उसे समानता की स्थिति नहीं दी। घर व आफिस के दोहरे दायित्वों का पालन करती, रोल कान्फिलेक्ट से जूझती इसी सशक्तिकृत नारी की कानून का कवच भी अधिक रक्षा नहीं कर सका पुरूष की भोगवादी मानसिकता जिसमें एक पिता के द्वारा अपनी ही पुत्री के सील भंग करने के उदाहरण मिलते हैं, बढ़ती उपभोगतावादी मानसिकता, जिसने उसे सेक्स ऑब्जेक्ट में बदल दिया है, वास्तव में महिला पुरूष के सम्बन्धों में सार्थक परिवर्तन की ओर संकेत नहीं करती। आज भी स्त्री के भाग्य–विधाता उसके पिता व पति ही हैं, जो जाति से बाहर विवाह करने पर मृत्यु दण्ड (आनर किलिंग) के रूप में देते हैं वहीं दहेज न लाने के आरोप में पति के द्वारा जलाकर की गयी हत्या पत्नी की कमायी, परन्तु व्यय का निर्णय पति का, उच्च वर्गीय स्त्री से सौन्दर्य की वस्तु बनने की मांग व निम्न वर्गीय स्त्री से एक ऐसी मशीन बनने की इच्छा, जो कभी नहीं थकती, यह भी विश्व–समाज का एक पक्ष है।

वास्तव में आवश्यकता एक सन्तुलन की है, सम्बन्ध की है, एक निर्मल सहचर्य की है जो दमित है, शोषित है, पीड़ित है, उनके कल्याण की है, वही जो सशक्तिकृत है। समर्थ है, आत्म निर्भर की स्वतंत्रता से युक्त है, उन्हें सही दिशा लेने की।

21वी सदी की यह तीव्र गति से भागती दुनिया, जिसमें सरकार, गैर सरकारी संगठन, सिलि सोसाइटी, सभी का साझा दायित्व है कि महिलाओं का बड़ा भाग जो विकास की मुख्य धारा से पीछे छूट गया है, उसे गुणवत्तापरक शिक्षा दें, आत्म–निर्भर बनायें, जिसमें आरक्षण (पंचायत व लोकसभा) में सार्थक कदम हो सकता है। वहीं उन्हें महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक किया जाए कि वह वास्तव में सशक्तिकृत पुरूष–महिला सम्बन्धों को नवीन आयाम दें।

उल्लेखनीय है कि वह समर्थ पक्ष, वह शिक्षित पक्ष, वह सफल पक्ष, जो विकास की दौड़ में साथ–साथ दौड़ रहा है, जो सक्रमण काल के स्वतंत्रता व स्वच्छन्दता के विवाद में फंसा है, जिसने आज परिवार व विवाह की संस्थाओं पर प्रश्न चिन्ह् खड़ा कर दिया है, co-livingo Lesbian Gay Marriagesdk सूत्रपात कर दिया है वह प्रगति की राह पर सतर्कता के साथ अग्रसारित रहे व दिशा विमुख न हो।

वास्तव मं यह युद्ध की कौन श्रेष्ठतम्? कौन विजयी हुआ? से महत्वपूर्ण है। हम विजयी हों। सम्यता को उन्नति व प्रगति के मार्ग पर ले जायें इसके लिए यह अतिआवश्यक है कि नारी व पुरूष हठधार्मिता का त्याग करें, सहयोगी बने, मित्रवत बनें सभी वह सही अर्थों में मानवता को ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति कह सकेंगे व सभ्यता को सांस्कृतिक गुणो से परिपोषित, सम्पादित कर सकेंगे। इस राष्ट्र को, इस विश्व को संयुक्त होकर सुजलाम, सुफलाम व मल्यजशीतलाम बना सकेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. त्रिपाठी, पं0 रामनरेष– कविता कौमुदी, भाग–5 (ग्राम गीत).
2. उपाध्याय, डॉ0 कृष्णदेव– भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययन.
3. आर्चर, डब्लू0 जी– भोजपुरी ग्राम–गीत (बिहार रिसर्च सोसाइटी पटना).